REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
भाषा शिक्षण के उपागम
Part -2
LIVE
01-01-2025 11:00 AM

रचना शिक्षण उपागम: भाषिक तत्वों के शिक्षण के लिए पाठ संसर्ग उपागम के अतिरिक्त 'रचना शिक्षण उपागम' भी एक सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से भी उच्चारण शिक्षण, वर्तनी शिक्षण, शब्द शिक्षण और वाक्य शिक्षण के अच्छे अवसर मिलते हैं।

सीखने का एक सक्रिय तरीका

रचना के दो रूप हैं- मौखिक रचना और लिखित रचना। मौखिक रचना में उच्चारण शिक्षण का अधिक अवसर मिलता है और लिखित रचना में वर्तनी शिक्षण का।

रचना शिक्षण उपागम - सीखने एक तरीका है जिसमें बच्चे सक्रिय रूप से अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं।

इस उपागम में बच्चों को किसी विषय के बारे में वास्तविक जीवन से जुड़े उदाहरणों के जरिए समझाया जाता है।

* रचना शिक्षण में बच्चों को जिज्ञासु बनाया जाता है।
* इस उपागम में बच्चों को पर्यावरण और प्रकृति के प्रति जागरूक किया जाता है।

* रचना शिक्षण के लिए विषय और विधा का चयन किया जाता है
* इस उपागम में बच्चों को व्यक्तिगत, स्थानीय और वैश्विक घटनाओं एवं स्थितियों को समझने के लिए प्रेरित किया जाता है।
* रचना शिक्षण के लिए रूप रेखा तैयार की जाती है।
* रचना शिक्षण के लिए लेखन एवं संशोधन कार्य किया जाता है

✍ **उच्चारण शिक्षण**- मौखिक रचना के अनेक रूपों- वार्तालाप, कथन या वर्णन, भाषण, परिसंवाद, वाद-विवाद, समाचार-दर्शन, कविता सुपाठ आदि में उच्चारण-शिक्षण का अवसर मिलता है। इसमें शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाना चाहिए। स्मरण रहे कि इन मौखिक रचना के रूपों में केवल शब्दों के शुद्ध उच्चारण का ही महत्व नहीं है, अपितु कथन प्रस्तुत करने, भाषण देने, कविता सुपाठ आदि में अनुतान, बलाघात, संगम, गति, यति आदि का भी विशेष महत्व है, तभी ये प्रभावपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। अतः इनके शिक्षण पर भी यथाप्रसंग बल दिया जाना चाहिए।

वर्तनी शिक्षण- लिखित रचना शिक्षण उपागम वर्तनी शिक्षण की दृष्टि से विशेष उपयोगी है। पत्र, प्रपत्र से लेकर व्याख्या, वर्णन, कहानी, सार संक्षेपण, पल्लवन, निबंध आदि लिखित रचना के विभिन्न रूपों में शब्दों की शुद्ध वर्तनी का ध्यान रखना आवश्यक है। शिक्षार्थियों के लिखित रचना कार्यों में पाई गई वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का संशोधन आवश्यक है। इस हेतु –

लम्बा चौड़ा विकास

- वर्तनी की अशुद्धियों को रेखांकित किया जाए और शिक्षार्थियों से स्वयं संशोधन के लिए कहा जाए। उनकी सहायता के लिए पाठ्यपुस्तक, शब्दकोश अथवा कक्षा के लिए तैयार की गई शब्द सूची दी जा सकती है, शिक्षार्थी इन्हें

देखकर वर्तनी शुद्ध करें। यह स्वयं संशोधन विधि शिक्षार्थियों में वर्तनी के प्रति सजगता की आदत विकसित करेगी। यदि शब्दकोश अथवा अन्य स्रोत सामग्री न हो तो शिक्षार्थी की रचना पुस्तिका में प्रत्येक पृष्ठ पर नीचे एक-दो पंक्तियाँ खाली छुड़वा दी जाएँ। शिक्षक अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को वहाँ लिखें और शिक्षार्थी को शुद्ध रूप लिखने के लिए कहें।

- शिक्षार्थी की रचना पुस्तकों और सत्रीय परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिकाओं से वर्तनीगत अशुद्ध शब्दों का चयन और वर्गीकरण किया जाए।

इन अशुद्धियों के निराकरण के लिए अभ्यास तैयार किए जाए और उनके आधार पर शिक्षार्थियों से शुद्ध वर्तनी के प्रयोग का अभ्यास कराया जाए।

वाक्य शिक्षण- रचना शिक्षण उपागम द्वारा वाक्य-शिक्षण में यथेष्ट सहायता मिलती है। शुद्ध वाक्य रचना संबंधी अभ्यासों की दृष्टि से निम्न सुझाव उपयोगी होंगे-

- वाक्यों में शुद्ध पदक्रम संबंधी अभ्यास।
- अपूर्ण वाक्यों को पूरा करना अथवा वाक्य में रिक्त स्थानों की पूर्ति।

- वाक्य में अर्थ की दृष्टि से प्रयुक्त अनुपयुक्त शब्द की जगह उपयुक्त शब्द का प्रयोग।

राम दौड़ता है। सीता खाती है।

- लिंग, वचन, विभक्ति, पुरुष के अनुसार वाक्य का रूपान्तरण।
- संयुक्त, मिश्र, सरल वाक्यों की रचना तथा उनका परस्पर रूपान्तरण।
- कर्ता, कर्म और क्रिया की विभिन्न स्थितियों में अन्विति।
- अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखने का अभ्यास।

भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

रुचि जाग्रत करने का सिद्धान्त:

- बालक के लिए शिक्षण उस समय तक प्रभावी नहीं होगा जब तक उसमें सीखने के लिए रुचि जाग्रत न हो जाए। किसी वस्तु पर हमारा ध्यान तभी केन्द्रित हो पाता है जब हमारी उसमें रुचि हो। अतः बालक की शिक्षण में रुचि को जाग्रत करना आवश्यक है।

प्रेरणा का सिद्धान्त:

सीखने

➩ रुचि जाग्रत होने पर अधिगम की प्रेरणा मिलती है और प्रेरणा से ही बालक में रुचि का विकास होता है। रुचि, आवश्यकता और प्रयोजन शिक्षा की दृष्टि से उपयोगी प्रेरक हैं। उद्देश्यहीन, प्रयोजनरहित कार्य मानसिक शिथिलता उत्पन्न कर देता है। अतः भाषा शिक्षण भी प्रयोजनपूर्ण और सोद्देश्य होना चाहिए।

क्रिया द्वारा सीखने का सिद्धान्त:

➪ इस सिद्धान्त का अर्थ है कि जो कुछ बालक को सिखाया जाए, वह उसको निष्क्रिय श्रोता बनाकर नहीं सुने अपितु उसमें उसकी सक्रिय प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाए। बालक को भी सीखने में उसी समय आनंद आता है जब वह क्रिया द्वारा अपने आप सीखता है।

जीवन से जोड़ने का सिद्धान्त:

- इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी विषय को पढ़ाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह जीवन में आने वाली परिस्थितियों से संबंधित है या नहीं। बालक उन बातों, विषयों को सरलता से सीख लेता है जो उसके जीवन से संबंधित होते हैं। इसी दृष्टि से भाषा शिक्षण में बालक के अपने अनुभवों को उदाहरणार्थ लेने से बालक को भाषा की जटिलता समझने में आसानी होती है।

राजस्थान शिक्षक

उद्देश्यपूर्ण शिक्षण का सिद्धान्त:

- शिक्षण उद्देश्यपूर्ण हो। बिना उद्देश्य के शिक्षण सफल नहीं हो सकता। इसी प्रकार पाठ्य सामग्री उद्देश्योन्मुख हो। शिक्षक पाठ्य सामग्री का चुनाव इस प्रकार करें कि वह शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा कर सके।
- **विभाजन का सिद्धान्त:** यह सिद्धान्त इस बात पर जोर देता है कि पाठ्यक्रम को कितनी इकाइयों अथवा पाठों में बाँटा जाए ताकि बालक सरलता से एक स्तर से दूसरे स्तर पर जा सके।

- **पुनरावृत्ति का सिद्धान्त :** पठित सामग्री की उपयुक्त पुनरावृत्ति से बालक का अधिगम दृढ़ होता है और साथ में उसमें स्पष्टता भी आती है। दोहराना

- **स्वाभाविकता विधि के अनुसरण का सिद्धान्त:** भाषा सीखना एक सहज प्रवृत्ति है और बालक मातृभाषा को उसी साहजिक प्रवृत्ति से श्रवण, अनुकरण, ग्रहण और अभ्यास की प्रक्रिया द्वारा सीख लेता है। इस प्रक्रिया में पहले सुनना और समझना', 'उच्चारण करना और बोलना' क्रम स्वाभाविक हैं। इसके बाद वह 'पढ़ना और लिखना' सीखता है। शिक्षण में हमें इसी स्वाभाविक क्रम को अपनाना चाहिए। सबसे पहले बालक को शुद्ध, स्पष्ट भाषा सुनने को मिले

जिसका वह अनुकरण करे। इससे भाषा सीखने की पहली प्रक्रिया 'सुनकर समझना' का अभ्यास होगा। फिर उसे बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बोलने में प्रारम्भिक स्तर पर शुद्ध उच्चारण पर बल देना चाहिए। यदि इसी समय शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण की आदत पड़ जाएगी तो आगे कभी कठिनाई नहीं होगी।

बोलने में उच्चारण के अतिरिक्त वाक्यों की शुद्धता पर भी बल देना चाहिए। यह स्पष्ट है कि वाक्य ही भाषा की इकाई है। बालक अपना भाव प्रकट करना चाहता है और इसके लिए उसे वाक्य या वाक्यों का ही आश्रय लेना पड़ता

है। उसकी रुचि शब्दों एवं ध्वनियों में नहीं रहती है। अत: वाक्य से भाषा की शिक्षा प्रारंभ होनी चाहिए, फिर शब्दों और ध्वनियों की ओर बढ़ना चाहिए।

सुनने और बोलने की शिक्षा के बाद पढ़ने और लिखने का क्रम अपनाना स्वाभाविक विधि होगी।

- **क्रियाशीलता का सिद्धान्त :** भाषा सीखना एक कला है। भाषा सतत प्रयोग, अभ्यास और व्यवहार से आती है। किसी भी कला को सीखने की दो विधियाँ हैं-

  - उसके सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करके

✍ अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा स्वयं प्रयोग और अभ्यास द्वारा। क्रियाशीलता और अभ्यास की विधि को 'प्रयोग और भूल' अथवा 'प्रयोग और अभ्यास' की विधि कह सकते हैं। भाषा सीखने की यही स्वाभाविक विधि है।

➯ **मौखिक कार्य अथवा बोलचाल का सिद्धान्त :** भाषा सीखने में बोलने की क्रिया का सबसे अधिक महत्व है। अत: बालक को भावाभिव्यक्ति के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। बोलने का अभ्यास भाषा सीखने का आधार है और कक्षा में पढ़ते समय बालकों को इसका प्रचुर अवसर मिलना चाहिए। बोलने पर ही शुद्ध उच्चारण, बलाघात, स्वराघात, आरोह-अवरोह आदि